www. kalyancollege.org

ISSN-0972-9909

छत्तीसगढ़-विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता,
वाणिज्य एवं विज्ञान की
त्रैमासिक शोध-पत्रिका



अंक-42, वर्ष - 12, जुलाई-सितंबर, 2013

ISSN-0972-9909 CHHATTISGARH VIVEK www.kalyancollege.org

छत्तीसगढ़ विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता, वाणिज्य एवं
विज्ञान की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक-42, वर्ष -12, जुलाई-सितंबर, 2013

•

संपादक
आर.पी. मिश्रा

•

प्रबंध संपादक
प्रो. एल. आर. वर्मा

•

सहायक संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा

कल्याण अध्ययन-विश्लेषण एवं अनुसंधान केंद्र
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाईनगर (छत्तीसगढ़)

ISSN-0972-9909

छत्तीसगढ़ विवेक

कला, मानविकी, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता, वाणिज्य एवं विज्ञान की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक-42, वर्ष -12, जुलाई-सितंबर, 2013

अनुक्रम

1	Provisions of Law and Maoism	Dr. Priya Rao	5
2	Marriage is Holy Wedlock or Holy Deadlock	Suresh Kumar Bharti	10
3	Use of Myths in ARUN JOSHI' "The Last Labyrinth"	Aruna M. Choubey	14
4	A Study on the Awareness Among Elementary School Teachers in the National Capital Region	Mrs. Shraddha Anil Dr. Shobha Purkar	16
5.	Chhattisgarh-An Era of Economic Growth & Development	Dr.Sanjay Pandey Mr.Deeptanshu Sharma	19
6	आधुनिक भारत में होने वाले सामाजिक परिवर्तन में वैश्वीकरण की भूमिका	डॉ के.एन.दिनेश	22
7	आर्थिक विकास में स्थानीय उद्यमशीलता का योगदान	डॉ. लखन चौधरी	25
8	प्राचीनकाल में जल की उपयोगिता और विभिन्न धर्मों में जल का महत्व	डॉ. अमित शुक्ल	30
9	सेवा क्षेत्र का भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ता महत्व	डॉ.आशीष दुबे	34
10	आधुनिकीकरण का कमार जनजाति परिवार पर प्रभाव	डॉ. निस्तार कुजूर	30
11	छत्तीसगढ़ी कहावतों में निहित लोकतत्व	डॉ. फ़िरोज़ा जाफ़र अली,	40
12	स्वतंत्रता पूर्व की पत्रकारिता में जेल पत्रिका का योगदान	अखिलेश तिवारी	43
13	उच्च शैक्षिक उपलब्धि एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की वृत्तिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. कविता वर्मा	46
14	प्रत्यायोजित मातृत्व : सामाजिक व्यवस्था की नवीन चुनौतियाँ	डॉ. राजेश शुक्ला	49
15	रामनारायण सिंह 'मधुर' : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य	डॉ. रमेश टण्डन	52
16	लोक साहित्य का स्वरूप	डॉ. राजेश कुमार दुबे, डॉ. सुधीर शर्मा	55
17	अपराध एवं दण्ड : वर्तमान परिदृश्य में	डॉ. श्रीमती व्ही. सेनगुप्ता	57
18	उपन्यास और जीवन का संबंध	भागवत प्रसाद	60

ISSN-0972-9909

रामनारायण सिंह 'मधुर' : व्यक्तित्व एवं व्यंग्य

डॉ. रमेश टण्डन (सहायक प्राध्यापक)
महात्मा गांधी शा.महाविद्यालय, खरसिया

सारांश

बचपन में अध्ययन के प्रति अरूचि रखने वाले, बाबा की मृत्यु पर शोक व्यक्त न कर 'कर्मभूमि' उपन्यास को देर तक पढ़ने वाले डॉ. रामनारायण सिंह मधुर एक बार कक्षा – 9वीं में अनुत्तीर्ण हो गये थे। चित्रकला, संगीत एवं देशाटन में रूचिकर डॉ. मधुर कष्ट के साथ कालेज की पढ़ाई को पूरा किए। आपने व्यंग्य निबंध – संग्रह के माध्यम से सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनीतिक, मानव प्रवृत्तिगत, आत्म व्यंग्यात्मक निबंध लिखे। इसमें प्रमुखतः पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करती अर्द्ध नग्न नारी, पुलिस, पार्टी, नेता – मंत्री, कवि आदि के चरित्रों को प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष रेखांकित किया गया है।

व्यक्तित्व

आपके पूर्वज झोटिकराय – बहोरिक राय राजस्थान से आकर उत्तरप्रदेश के वाराणसी जिले की तहसील चंदौली के किसी गांव में बसे थे और अब पूरे तहसील की क्षत्रिय जाति उनकी संतान हैं। आप सभी बढ़वल परगने में रहते हैं इसलिए बढ़वलिया राजपूत कहे जाते हैं। आपके प्रपितामह श्री निरंजन सिंह खुरूहुंजा गांव से आकर सिकरी गांव में बस गये। उनकी दो संतानें– श्री रामबदन सिंह और श्री पाल सिंह। श्री पाल सिंह को एक ही संतान हुई– श्री शिवशंकर सिंह जो आपके पिता हैं। आपकी माँ राधा देवी जो बिहार प्रांत के सासाराम जिले में कुदरा के पास पियां गांव की थीं।

आपका जन्म 15 जनवरी 1937 को हुआ। एक बार आप स्कूल नहीं गये, तो गुरूजी ने छात्रों को आपको बुला लाने के लिए भेजा फिर भी आप तैयार नहीं हुए, तो आपके बाबा ने एक बड़ा – सा बताशा दिया और इस लालच में आप स्कूल गये। दूसरी घटना, जब आपके बाबा की मृत्यु हुई, तब आप सो रहे थे। रोने की आवाज से आप उठे, पर कुछ समय नहीं आये। बाबा की अर्थी उठ जाने के बाद आप 'कर्मभूमि' उपन्यास पढ़ने लगे, कब तक पढ़े स्वयं को याद नहीं।

आपके पिता की पांच संतान– श्यामनारायण सिंह, रामनारायण सिंह, वशिष्ठ नारायण सिंह, शकुंतला देवी एवं हीरा देवी।

पढ़ने लिखने में आपका मन बहुत ही कम लगता था। परन्तु जब आप मिडिल स्कूल बबुरी से सातवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किये, तो आपके काका बहुत खुश हुए और वाराणसी नगर के उदयप्रताप कालेज में पढ़ने के लिए भेज दिये वहाँ 9वीं में अनुत्तीर्ण हो गये। फिर भागकर रायबरेली आये जहाँ आपके पिता सहकारिता विभाग में आडिटर थे। आपकी ईच्छा चित्रकला में रही। संगीत की शिक्षा भी आपने ली, पर आपके छोटे भाई की ईर्ष्या के कारण एवं संगीत में आपकी तल्लीनता के कारण आपके संगीत की शिक्षा बंद करा दी गई। इंटरमीडिएट के लिए आप इंटर कालेज चंदौली में प्रवेश लिये। कालेज का नाम– महेन्द्र टेक्निकल कालेज। प्रतिदिन 05 किलोमीटर आ–जाकर, रात्रि में मात्र एक घंटा लालटेन की रोशनी में पढ़कर तृतीय श्रेणी में इंटरमीडिएट उत्तीर्ण किये। फिर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी से बी. ए., एम.ए.(57:) किये।

1961 में जौनपुर तिलकधारी प्रशिक्षण महाविद्यालय से एल.टी. किये। जुलाई 1962 से जुलाई 1964 तक मंदार विद्यापीठ भागलपुर में आप हिन्दी पढ़ते और 'प्राच्य भारती' के संपादन में सहयोग करते। फिर 1964 में ही आपकी नियुक्ति नर्मदा महाविद्यालय होशंगावाद में हो गयी। सितम्बर 1964 में आपकी दायीं आँख खराब हो गई थी, जिसके कारण उपचार के बावजूद भी आपको उस आँख से थोड़ा कम दिखाई देता है। जनवरी 1969 में सागर विश्वविद्यालय से 'हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास' शीर्षक शोध प्रबंध पर आपको पी–एच. डी. की उपाधि प्रदान की गई।

होशंगाबाद में आपको पद्मश्री डॉ.बाकणकर जी का सानिध्य मिला। एक दिन वे आपके यहाँ आये और भूख लगने की बात किये। आपने उन्हें पराठा, सब्जी और टमाटर की मीठी चटनी खिलाई। स्थानांतरित होकर सिवनी आने के बाद आपका 5, 6 अप्रैल 1997 को अरविंद 'मानव' की प्रेरणा से सार्वजनिक अभिनंदन हुआ।

सितम्बर 1976 में आपने सपने में पिताजी की अर्थी देखी, फिर नींद नहीं आयी। दूसरे ही दिन उनकी मृत्यु का

ISSN-0972-9909

दुःखद समाचार मिला। आपकी मॉ श्रीमती राधा देवी सांवले रंग की नाटी–सी, अत्यधिक धार्मिक, तेज–तर्रार महिला थीं। इनका बहुओं से कभी मेल–मिलाप नहीं था। अंतिम समय में मधुमेह से ग्रस्त हुईं एवं 19 मई 1997 को परलोक सिधारीं।

आपकी तीव्र रूचि भ्रमण की रही है। आकाशवाणी के भोपाल, जबलपुर, रायपुर, छिन्दवाड़ा केन्द्रों से आपके व्यंग्य, ऐतिहासिक आलेख एवं कविताओं का प्रसारण हुआ है। आप म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद, जनवादी लेखक संघ सिवनी, शंखनाद संस्था सिवनी के अध्यक्ष रहें हैं। हिन्दी पाठ्यक्रम समिति के अनेक बार सदस्य रहें हैं।

व्यंग्य

आपकी व्यंग्य रचनाएँ इस प्रकार हैं–

1.खुशहाल चंद का चुनाव, 1984

2.हिन्दी के प्रतिनिधि व्यंग्य, 1987

3.लक्ष्मी नंबर दो

4.बरसात की विरहिणी, 1996

5.नेता जी बोले, 2000

आपदा की स्थिति में देश के नेता की रवैया पर आपने चुटकी ली –

"भोजन में जो स्थान चटनी और अचार का है, मौसम में वही स्थान बरसात का है। मिनिस्टर साहब ने बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का हवाई सर्वेक्षण किया फिर भाषण दिया – 'आपके दुख से सरकार दुखी है। बाढ़ न आने देने के लिए सरकार .त संकल्प है। कल ही मंत्रिमंडल की बैठक होगी, जिसमें बाढ़ रोकने के उपायों पर विचार किया जाएगा। अगले वर्ष से बाढ़ नहीं आएगी। अगर आएगी तो हम उसे बीच में ही रोक देंगे। इस बाढ़ में जो मर गए, उनका दुख नहीं। जो बचे हैं उनका ही दुख है। जय हिन्द।"[1]

साहित्य समाज का दर्पण होता है। परन्तु आपने इस साहित्य (पद्य साहित्य) के रचयिता की जीवन शैली पर इन शब्दों में आक्रमण किया –

"कविगण पधार चुके हैं। अभी दारू पी रहें हैं। मंच पर जल्दी ही आने वाले हैं। कविता रूपी तरंग तब उठती है जब कवि रूपी पत्थर दारू रूपी तालाब में गोता लगा लेता है।"[2]

भारतीय नारियों द्वारा पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण पर कलम चलाते हुए आपने शादी–शुदा महिलाओं के तंग व अल्प पोशाक, नाइट क्लब गमन आदि पर व्यंग्यार्थ प्रस्तुत किया है –

"लूना फकत नमूना ही नहीं थी। कुछ और भी थी। मसलन फ्रैंक थी। 'ब्वाय फ्रैंड' बनाने में माहिर थी। बाबकट बाल, तंग लिबास जिससे उसका अर्धनग्न शरीर मनचलों के लिए कौतूहल का विषय बना रहता, फर्राटे से अंग्रेजी बोलती, मित्रों के साथ इधर–उधर घूमती रहती तो बुड्ढे निर्लज्ज कहकर मुँह फेर लेते, नवयुवक टकटकी लगाकर देखते – बड़ी एडवांस थी लूना। अंग्रेजी भाषा साहित्य एवं सभ्यता में उसकी गहरी अभिरूचि थी। एक शाम 'नाइट गाउन' पहन लूना ने हरिचरण से 'नाइट क्लब' जाने का प्रस्ताव किया किन्तु हरिचरण ने मना कर दिया। इस पर क्रुद्ध हो लूना ने कहा, 'हियर मी, मैं तुम्हारी वाइफ हूँ, केप्ट यानी रखैल नहीं हूँ, मैं नाइट क्लब तो क्या, जहॉ इच्छा होगी, वहॉ जाऊँगी। एक छरहरे सुन्दर नवयुवक की कमर में हाथ डालकर मैडम लूना अर्थात् उसकी वाइफ नाच रही है और नाच–नाच कर गा रही है – आई लव यू, आई लव यू, डियर मैथ्यू, डियर मैत्यू।"[3]

निबंधों में व्यंग्य – निबंध लिखना कठिन काम है और व्यंग्य–निबंधों में आत्म – व्यंग्य निबंध लिखना और भी कठिन काम होता है। यह इसलिए कि व्यंग्य–निबंध लिखने से दूसरों से मार खाने का भय बना रहता है जो सहनीय है। पर आत्म व्यंग्य लिखने से स्वयं की कमजोरी व दुष्प्रवृत्ति के उजागर होने का खतरा बना रहता है, इससे बड़ी बदनामी हो सकती है एवं अपनों की नजर में गिरने का संशय बना रहता है। आपने यह दिलेरी कर दिखाई है। आत्म व्यंग्य के साथ–साथ आपने मानव प्रवृत्ति – चौर्यवृत्ति को उजागर किया है। कुछ लोग मौके की तलाश में रहते हैं और समय आते ही फायदा उठाते हैं। व्यंग्य निबंधों के माध्यम से मंदिर में जूता चोरी को आपने परोक्ष रूप से उठाया जो निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है –

"श्री राममंदिर परकोटे से घिरा था और वहॉ से चप्पलों पर नजर रखना असंभव था। बहुत माथा – पच्ची करने के बाद एक सुंदर तरकीब समझ में आई, चटपट चप्पलों को तौलिए में लपेट बगल में दबाया और झटपट प्रभु श्रीराम के दर्शनार्थ चल पड़ा। श्रद्धा भक्ति ने कुछ ऐसा जोर मारा कि दानों हाथ जोड़कर प्रणाम करने लगा। तौलिए की गठरी बगल से छूटकर नीचे गिर पड़ी और चप्पलें बंधन विहीन होकर एक दूसरे पर चढ़ बैठी। सहसा पुजारी महाराज चिल्ला पड़े – पापी, चांडाल, जूता चोर, तूने मंदिर को भ्रष्ट कर डाला। तड़ातड़ लात घूसों की वर्षा मेरे ऊपर होने लगी। मार सहते–सहते शरीर अधमरा हो गया।"[4]

भिखारी पर तात्विक विवेचन भी आपकी लेखनी ने की है। उधार मांगने वालों को आपने भिखारी माना है –

"उधार मांगने वाले और भीख मांगने वाले एक ही श्रेणी में आते हैं, पर उनमें मूलभूत तात्विक अंतर भी है। भीख मांगने

वाले गिड़गिड़ाते हैं, घिघियाते हैं, हाथ जोड़ते हैं, पेट दिखाते हैं, मर्मभेदी करूण स्वर में बोलते हैं और वह सभी कुछ करते हैं जिससे सामने वाला पिघल जाये। किन्तु उधार मांगने वाले शान से आते हैं और शान से रूपये या सामान लेकर चले जाते हैं। न मिलने पर आंखें दिखाते हैं और देख लूंगा की धमकी भी दे जाते हैं।"[5]

देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था व प्रमुख राजनीतिक पार्टियों पर भी आपने सवाल खड़ा किया –

"अपने देश में छेड़छाड़ का प्रचलन बड़ा व्यापक है। चोर पुलिस को छेड़ता रहता है और पुलिस सोती रहती है। जब जागती है किसी निरपराध को छेड़ देती है। मुल्ले पण्डित को और पण्डित मुल्लों को छेड़कर दंगे कराते ही रहते हैं। व्यापारियों एवं मजदूरों की छेड़छाड़ तो लगातार कई–कई दिन तक चलती रहती है और फिर हड़ताल, धरना, घिराव से उसका समापन होता है। राजनीतिक दलों की पारस्परिक छेड़छाड़ तो प्रसिद्ध है। विरोधी दल की छेड़खानी का जवाब सरकारी दल बड़ी मुहब्बत से देता है – अश्रुगैस छोड़कर, गोली चलाकर। सर्वाधिक छेड़खानी करने वाले प्राणी का नाम नेता है। उसे जनता को छेड़ने में बड़ा मजा आता है। वह भरी भीड़ में जनता को छेड़ देता है और जनता अपनी अस्मत बचाने के लिए बालवधू की तरह भयभीत होकर भाग खड़ी होती है।"[6]

संदर्भ

1. मधुर, रामनारायण सिंह : लक्ष्मी नंबर दो (मौसम बरसात का)
2. मधुर, रामनारायण सिंह : लक्ष्मी नंबर दो (एक कवि सम्मेलन का ऑखों देखा हाल)
3. मधुर, रामनारायण सिंह : बरसात की विरहिणी (मैडम लूना)
4. मधुर, रामनारायण सिंह : खुशहाल चंद का चुनाव (जूता चोर)
5. मधुर, रामनारायण सिंह : गंगा से बैन गंगा तक, पृ. 66
6. मधुर, रामनारायण सिंह : लक्ष्मी नंबर दो (न छेड़ने का दुख)

■



किसी को उसकी योजनाओं में हतोत्साह नहीं करना चाहिए। आलोचना की प्रवृत्ति का पूर्णत: परित्याग कर दो। जब तक वे सही मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं; तब तक उन्के कार्य में सहायता करो; और जब कभी तुमको उनके कार्य में कोई ग़लती नज़र आये, तो नम्रतापूर्वक ग़लती के प्रति उनको सजग कर दो। एक-दूसरे की आलोचना ही सब दोषों की जड़ है। किसी भी संगठन को विनष्ट करने में इसका बहुत बड़ा हाथ है। किसी बात से तुम उत्साहहीन न होओ; जब तक ईश्वर की कृपा हमारे ऊपर है, कौन इस पृथ्वी पर हमारी उपेक्षा कर सकता है? यदि तुम अपनी अन्तिम साँस भी ले रहे हो, तो भी न डरना। सिंह की शूरता और पुष्प की कोमलता के साथ काम करते रहो।

–स्वामी विवेकानन्द